



Hargharpanditji

॥ एकादशी का महात्म्य ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ एकादशी का महात्म्य ॥

सनातन धर्म में एकादशी को सभी व्रतों में श्रेष्ठ माना गया है। यह तिथि भगवान श्री विष्णु को अत्यंत प्रिय है। प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि को आने वाली एकादशी का व्रत श्रद्धा, भक्ति और नियमपूर्वक करने से मनुष्य के पापों का क्षय होता है, मन शुद्ध होता है तथा भगवान श्रीहरि की कृपा प्राप्त होती है। पद्म पुराण, स्कन्द पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण तथा अन्य वैष्णव ग्रंथों में एकादशी व्रत का विस्तृत महात्म्य वर्णित है।

एकादशी की उत्पत्ति

पुराणों के अनुसार प्राचीन काल में मुर नामक एक अत्यंत बलशाली असुर था। उसने देवताओं और ऋषियों को अत्यधिक कष्ट पहुँचाया। देवताओं ने भगवान श्री विष्णु से रक्षा की प्रार्थना की। भगवान श्रीहरि ने मुरासुर से दीर्घकाल तक युद्ध किया और विश्राम के लिए एक गुफा में चले गए। जब मुरासुर भगवान पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा, तब भगवान श्री विष्णु के दिव्य तेज से एक परम तेजस्विनी दिव्य शक्ति प्रकट हुई। उस देवी ने मुरासुर का वध कर दिया। भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर उस दिव्य शक्ति को "एकादशी" नाम दिया, क्योंकि वह मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को प्रकट हुई थीं। भगवान ने वरदान दिया कि जो भी श्रद्धापूर्वक एकादशी का व्रत करेगा, उसके पाप नष्ट होंगे और अंत में उसे मोक्ष की प्राप्ति होगी।

एकादशी व्रत का आध्यात्मिक महत्व

एकादशी केवल भोजन का त्याग नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म की शुद्धि का व्रत है। इस दिन इन्द्रियों पर संयम, भगवान विष्णु का ध्यान,

मंत्र-जप, भजन, कीर्तन, दान, सत्संग और धर्मग्रंथों का अध्ययन विशेष फलदायी माना गया है।
इस व्रत का उद्देश्य आत्मसंयम, सात्त्विक जीवन और ईश्वर-भक्ति को दृढ़ करना है।

एकादशी व्रत के फल

भगवान श्री विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।
पापों का क्षय होकर मन की शुद्धि होती है।
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

मानसिक शांति, आत्मबल और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।
परिवार में सुख, समृद्धि और मंगल का वास होता है।
पूर्वजों की शांति तथा कुल का कल्याण होने की मान्यता है।
अंत समय में भगवान के धाम की प्राप्ति का पुण्य फल बताया गया है।
एकादशी पर क्या करना चाहिए?

प्रातः स्नान कर भगवान श्री विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा करें।
तुलसी दल अर्पित करें।
"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" अथवा "ॐ नमो नारायणाय" मंत्र का जप करें।

विष्णु सहस्रनाम, भगवद्गीता या श्रीमद्भागवत का पाठ करें।
यथाशक्ति उपवास या फलाहार करें।
दान-पुण्य, गौ-सेवा और जरूरतमंदों की सहायता करें।
रात्रि में हरिनाम-स्मरण, भजन और जागरण (यदि संभव हो) करें।
एकादशी पर किन बातों से बचें?
अनाज और दालों का सेवन (परंपरा के अनुसार)।
असत्य, क्रोध, निंदा और हिंसा।
मदिरा, मांसाहार तथा तामसिक भोजन।

एकादशी का संदेश

एकादशी हमें केवल उपवास करना नहीं सिखाती, बल्कि जीवन में संयम, सदाचार, करुणा, क्षमा, सेवा और ईश्वर-भक्ति का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देती है। जब मनुष्य अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखकर भगवान श्रीहरि का स्मरण करता है, तब उसका जीवन अधिक शांत, पवित्र और सार्थक बनता है।

उपसंहार

शास्त्रों में कहा गया है कि श्रद्धा, नियम और भक्ति के साथ किया गया एकादशी व्रत मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करता है। भगवान श्री विष्णु की कृपा से भक्त के कष्ट दूर होते हैं, मन में सद्बुद्धि का उदय होता है और अंततः उसे परम कल्याण का मार्ग प्राप्त होता है। इसलिए एकादशी को "व्रतों की रानी" भी कहा जाता है और इसका पालन सनातन परंपरा में अत्यंत पुण्यदायक माना गया है।

Hargharpanditji

PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR